

Chapter-2: एक दल के प्रभुत्व का दौर

- आपको अब अंदाजा लग चुका होगा कि स्वतंत्र भारत का जन्म किन कठिन परिस्थितियों में हुआ, अपने देश के सामने शुरुआत से राष्ट्र-निर्माण की चुनौती थी और इन गंभीर चुनौतियों के बारे में आप पढ़ चुके हैं। एसी चुनौती की चपेट में आकर कई एनी देशों के नेताओं ने फैसला किया कि उनके देश में अभी लोकतंत्र को नहीं अपनाया जा सकता है। इन नेताओं ने कहा कि राष्ट्रीय एकता हमारी पहली प्राथमिकता है और लोकतंत्र को अपनाने से मतभेद और संघर्ष को बढ़ावा मिलगा, उष्णविश्वाद के चंगुल से आजाद ही कई देशों में इसी कारण अलोकतांत्रिक शासन-व्यवस्था कायम हुई, इस अलोकतांत्रिक शासन - व्यवस्था के कई रूप थे
- पिछले साल अपने पढ़ा कि हमारा संविधान कैसे बना आपको यद् होगा कि हमारा संविधान 26 नवम्बर 1949 को तैयार हो चुका था और इसी दिन इस पर हस्ताक्षर हुई यह संविधान 26 जनवरी 1950 से अमल में आया। उस वक्त देश का शासन अंतरिम सरकार चला रही थी वक्त का तकाजा था कि देश का शासन लोकतांत्रिक रूप से निर्वाचित सरकार द्वारा चलाया जाए, संविधान ने नियम तय कर दिये थे और अब इन्हीं नियमों पर करने की जरूरत थी शुरु-शुरु में खयाल था कि यह काम महज चंद्र महीनों का है, भारत के चुनाव की जा रही थी कि देश का पहला आम चुनाव 1950 में ही किसी वक्त हो जायगी
- मतदाता-सूचियों का जब पहला प्रारूप प्रकाशित हुआ तो पता चला कि इसमें 40 लाख महिलाओं के नाम दर्ज हिने रहा है, उस वक्त देश में 17 करोड़ मतदाता थे, इन्हे 3200 विधायक और लोकसभा के लिए 489 सांसद चुनने थे, इन मतदाताओं में महज 15 फिसदी साक्षर थे
- चुनावों को दो बार स्थगित करना पड़ा और आखिरकार 1951 के अक्टूबर से 1952 के फरवरी तक चुनाव हुए। बहरहाल, इस चुनाव को अम्मन 1952 का चुनाव ही खा जाता है क्योंकि देश के अधिकांश हिन्सों में मतदान 1952 में ही हुई चुनाव अभियान, मतदान और मतगणना में कुल छह महीने लगे चुनावों में उम्मेदवारों के बीच मुकाबला भी हुआ ओसतन हर शीट के लिए चार उम्मीदार चुनो में मैदान थे लोगो ने इस चुनाव में बढ़-चढ़कर

हिस्सेदारी की कुल मतदाताओं में आधे से अधिक ने मतदान के अपना वोट डाला चुनावों के परिणाम घोषित हुई तो हरने वाले उम्मीद्वारे ने भी इन परिणामों को निष्पक्ष बताया

- यहाँ एक चुनावी मानचित्र दिया गया है इस पर एक नजर दौरान से आपको अंदाजा लगा जाएगा कि 1952-1962 के बीच कांग्रेस पार्टी किस कदर हावी थी दूसरा आम चुनाव 1957में और तीसरे 1962 में हुआ इन चुनाव में भी कांग्रेस पार्टी ने लोकसभा में अपनी पुरानी स्थिति बरकरार रखी और उसे तीन-चौथाई सीटें मिली | कांग्रेस पार्टी ने जितनी सीटें जीती थीं उसका दशांश भी कोई विपक्षी पार्टी नहीं जीत सकी विधानसभा के चुनावों में कहीं-कहीं कांग्रेस को बहुमत नहीं मिला ऐसा ही एक महत्वपूर्ण उदाहरण केरल का है 1957 में केरल में भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी की अगुआई में एक गठबंधन सरकार बनी ऐसे एकाध मामलों को अपवाद मान ली तो कहा जा सकता है कि केंद्र सरकार और प्रांतीय सरकारों पर कांग्रेस पार्टी का पूरा नियन्त्रण था
- मिसाल के लिए 1952 में कांग्रेस पार्टी को कुल वोटों में से मात्र 45 प्रतिशत वोट हासिल हुई थे लेकिन कांग्रेस को 74 फीसदी सीटें हासिल हुई सोशलिस्ट पार्टी वोट हासिल करने के लिहाज से दूसरे नंबर पर रही उसे 1952 के चुनाव में पूरे देश में कुल 10 प्रतिशत वूट मिले थे लेकिन यह पार्टी 3 प्रतिशत सीटें भी नहीं जीत पायी
- 1957 में ही कांग्रेस पार्टी को केरल में हर का स्वाद चखना पड़ गया था 1957के मार्च महीने में जो विधानसभा के चुनाव हुए उसमें कम्युनिस्ट पार्टी को केरल की विधानसभा के लिए सबसे ज्यादा सीटें मिली कम्युनिस्ट पार्टी को कुल 126 में से 60 सीटें हासिल हुईं और पांच स्वतंत्र उम्मेद्वारों को भी समर्थन इस पार्टी को प्राप्त था
- कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी का गठन खुद कांग्रेस के भीतर 1934 में युवा नेताओं की एक टोली ने किया था 1948 में कांग्रेस ने अपने संविधान में बदलाव किया बदलाव कांग्रेस सदस्य दोहरी सदस्यता न धारण कर सके
- आप यह बात पढ़ चुके हैं कांग्रेस का जन्म 1885 में हुआ था | उस वक्त यह नवशिक्षित ,कामकाजी और व्यापारिक वर्गों का एक हित- समूह भर थी लेकिन 20वीं सदी में इसने जनादोलन का रूप ले लिया इस वजह से कांग्रेस

ने एक जनव्यापी राजनीतिक पार्टी का रूप लिया और राजनीतिक -व्यवस्था में इसका दबदबा कायम हुआ

- 1920 के दशक के शुरूआती सालों में भारत के विभिन्न हिस्सों में साम्यवादी -समूह (कम्युनिस्ट ग्रुप) उभरे 1935से साम्यवादी ने मुख्यतया भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के दायरे में रहकर काम किया
- संगठनों और पार्टियों के अपने-अपने संविधान थे इनका सांगठनिक ढाँचा भी अलग था इनमें से कुछ (मसलन कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी) बाद में कांग्रेस से अलग हो गए और विपक्षी दल बने किसी खास पदति या नीति को लेकर मौजूद मतभेदों को कांग्रेस पार्टी सुलझा भले न पाए लेकिन उन्हें अपने आप में मिलाए रखती थी और एक आम सहमति कायम कर ले जाती थी
- कांग्रेस के गठबंधनों स्वभाव ने उसे एक असाधारण ताकत दी पहली बात ति यही कि जो भी आए, गठबंधन उसे अपने में शामिल कर लेता है इस कारण गठबंधन को अतिवादी रूख अपनाने से बचना होता है और हर मसले पर संतुलन को साधकर चलता पड़ता है सुलह-समझौते के रस्ते पर चलना और सर्व-समावेशी होना गठबंधन की विशेषता होती है इस रणनीति की वजह से विपक्ष कठिनाई में पड़ा विपक्ष कोई बात कहना चाहे तो कांग्रेस की विचारधारा और कार्यक्रम रहता है
- भारतीय जनसंघ का गठन 1951 में हुआ था श्यामा प्रसाद मुखर्जी इसके संस्थापक -अध्यपक थे इस दल की जड़े आजादी के पहले के समय से सक्रिय राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) और हिन्दू महासभा में खोजी सकती है चीन ने 1964 में अपना आनिवक -परीक्षण किया था इसके बाद से जनसंघ ने लगातार इस की पैरोकारी की भारत भी अपने आनिवक हथियार तैयार करो 1950 के दशक में जनसंघ चुनावी राजनीति के हाशिए पर रहा इस पार्टी को 1952 के चुनाव में लोकसभा की तीन सीटें पर मिलती और 1957 के आम चुनाव में इसने लोकसभा की 4 सीटें जीती
- कांग्रेस की अधिकतर प्रांतीय इकाइयों विभिन्न गुटों को मिलकर बनी थी ये गुट अलग-अलग विचारधारात्मक रूख अपनाते थे और कांग्रेस एक भारी -भरकर मध्यमार्गी पार्टी के रूप में उभरकर सामने आती थी दुसरी पार्टियाँ मुख्यतः कांग्रेस के इस या उस गुट को प्रभावित करने की कोशिश करती थी

- इस तरह अपने देश में लोकतांत्रिक राजनीति का पहला दौर एकदम अनूठा था राष्ट्रीय आन्दोलन का चरित्र समावेशी था इसकी अगुआई कांग्रेस ने की थी राष्ट्रीय आन्दोलन के इस चरित्र के कारण कांग्रेस की तरफ विभिन्न समूह वर्ग और हितों के लोग आकर्षित 1948 में चर्कवर्ती राजगोपालाचारी के गवर्नर-जनरल के पद की शपथ ग्रहण के बाद नेहरू मंत्रिमंडल बैठे हुई बाए से दाएं रफी अहमद किदवई बलदेव सिंह मोलाना आजाद प्रधानमंत्री नेहरू चक्रवर्ती राजगोपालाचारी सरदार वल्लभभाई पटेल राजकुमारी अम्रित कौर जॉन मथाई और जगजीवन राम खड़े खरे हुए बाएँ और दाएं :श्री गङ्गिल, श्री नियोगी, डा.अम्बेदकर, श्यामा प्रसाद मुखर्जी, गोपालस्वामी आयंगर और जयरामदास दौलतराम